स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

2016

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'स्त्रियाँ शैक्षिक दृष्टि से पुरुषों से कम नहीं रही हैं'– इसके लिए महावीर प्रसाद द्विवेदी ने क्या उदाहरण दिए हैं? किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए।

Answer:

'स्त्रियाँ शैक्षिक दृष्टि से पुरुषों से कम नहीं रही हैं' के तर्क में श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने निम्नलिखित उदाहरण दिए हैं–

(*i*) ऋषि अत्रि की पत्नी घंटों भाषण देते हुए अपनी विद्वत्ता का व्याख्यान करती थीं। जो प्रमाणित करता है कि स्त्रियाँ भी शिक्षा में पुरुषों से कम न थीं।

(*ii*) गार्गी ने तो अपने पांडित्य प्रदर्शन में बड़े-बड़े ज्ञानी ब्रह्मऋषियों तक को हरा दिया था।

उपर्युक्त उदाहरणों के द्वारा लेखक ने अपने मत को उचित ठहराया है।

Question 2.

'महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबंध उनकी खुली सोच और दूरदर्शिता का परिचायक है', कैसे?

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का निबंध अवश्य ही उनकी खुली सोच और दूरदर्शिता का परिचायक है क्योंकि उन्होंने उस समय स्त्री शिक्षा का समर्थन किया, जब कुछ स्वार्थी और पुरातनपंथी लोग उसे व्यर्थ और अनावश्यक समझते थे। महावीर जी जानते थे कि किसी भी समाज व देश का विकास बिना नारी की शिक्षा के संभव नहीं होगा। उन्होंने अनेक उदाहरणों तथा द्रोपदी, गार्गी आदि के माध्यम से नारी शिक्षा के महत्व को सिद्ध किया।

Question 3.

परंपराएँ विकास के मार्ग में अवरोधक हों तो उन्हें तोड़ना ही चाहिए, कैसे? 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा रचित पाठ 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में लेखक ने ऐसी परंपराओं का जमकर विरोध किया है जो स्त्री शिक्षा का विरोध करती हैं? ऐसी प्ररंपराएँ जो स्त्री को पुरुष के समकक्ष न माने उन्हें तोड़ने में ही भलाई है। प्रकृति के द्वारा स्त्री-पुरुष को समान उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बनाया गया था, परंतु पुरुष ने समाज के नियम बना, स्त्री का पतन निश्चित किया और अपने को ऊपर रखा। ऐसे पुरुषों को समझना होगा कि स्त्री-पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्री शिक्षा का महत्त्व पुरुष से भी अधिक है। शिक्षित स्त्री पूरे परिवार व समाज को शिक्षित कर सकती है। अतः हमें ऐसी परंपराओं को शीघ्र ही तोड़ देना चाहिए जो विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। उनकी भागीदारी को समझना होगा।

Question 4.

'प्राकृत केवल अपढ़ों की नहीं अपितु सुशिक्षितों की भी भाषा थी'– महावीर प्रसाद द्विवेदी ने यह क्यों कहा है?

Answer:

प्राकृत केवल अपढ़ों की नहीं, अपितु सुशिक्षितों की भी भाषा थी यह महावीर प्रसाद जी ने इसलिए कहा है क्योंकि उस समय जनसाधारण यही भाषा बोलता था। अनेक विद्वानों ने 'गाथा सप्तशती' सेतुबंध-महाकाव्य, कुमारपाल चरित और बौद्धों ने त्रिपिटक ग्रंथों की रचना प्राकृत में की थी। भगवान शाक्य मुनि और उनके चेले प्राकृत में ही धर्मोपदेश देते थे। अतः यह स्पष्ट है कि प्राकृत आम बोल-चाल की भाषा के रूप में प्रचलित थी और उसे बोलने वालों को किसी भी प्रकार से अपढ़ बताना उचित नहीं है।

Question 5.

'महिलाओं द्वारा जो अनुचित व्यवहार किया जा रहा है– वह उसकी शिक्षा का ही परिणाम है।' ऐसा कुतर्क कौन देते हैं और क्यों?

Answer:

'महिलाओं द्वारा जो अनुचित व्यवहार किया जा रहा है, वह उनकी शिक्षा का ही परिणाम है।' ऐसा कुतर्क पुरातनपंथी व दकियानूसी विचारों से ग्रस्त लोग देते हैं। ऐसे लोग समाज में केवल पुरुषों का ही वर्चस्व चाहते हैं और उन्हें लगता है कि यदि महिलाएँ पढ़-लिख गईं, तो घर की चहारदीवारी लाँघकर समाज में निकल जाएँगी और समाज में फिर पुरुषों का आधिपत्य समाप्त हो जाएगा। शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बना देगी और वे फिर अपने निर्णय स्वयं ले सकेंगी।

Question 6.

स्त्री-शिक्षा के समर्थन में महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा दिए गए दो तर्कों का उल्लेख कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

स्त्री-शिक्षा के समर्थन में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अकाट्य तर्क देकर पुरातनपंथी स्त्री-शिक्षा विरोधी मानसिकता पर गहरा कटाक्ष किया है उन्होंने कहा है कि यदि पढ़ाई करने के बाद स्त्री को अनर्थ करने वाली माना जाता है, तो पुरुषों द्वारा किया हुआ अनर्थ भी शिक्षा का ही दुष्परिणाम समझा जाना चाहिए। साथ ही प्राचीन काल की अनेक विदुषी महिलाओं का उदाहरण देते हुए द्विवेदी जी ने यह भी सिद्ध किया है कि तत्कालीन समय में भी स्त्री-शिक्षा का चलन था। उन्होंने यह भी कहा है कि पुराने समय में स्त्री पढ़ी-लिखी नहीं थी, शायद स्त्रियों को पढ़ाना तब ज़रूरी नहीं माना गया। लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं, इसलिए उन्हें पढ़ाना चाहिए। जैसे आवश्यकता के अनुसार पुराने नियमों को तोड़कर हमने नए नियम बनाए हैं, उसी प्रकार स्त्रियों की शिक्षा के लिए भी नियम बनाना चाहिए।

2015

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 7.

वर्तमान में स्त्रियों का पढ़ना क्यों ज़रूरी माना गया है, स्पष्ट कीजिए।

Answer:

वर्तमान समय में स्त्रियों का पढ़ना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि वे एक परिवार का संचालन करने के साथ-साथ समाज-निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, वे पुरुषों के कंधे-से-कंधा मिलाकर चलती हैं। आज वे घर के साथ-साथ बाहर की दुनिया में भी कदम रख चुकी हैं। स्त्रियों को निरक्षर रखने से समाज का अपकार व पतन होता है। यदि देश की जनसंख्या का आधा भाग अशिक्षित होगा, तो उन्नति में अवरोध उत्पन्न होगा। अतः देश, समाज व परिवार के कल्याण और विकास के लिए स्त्रियों का पढ़ना ज़रूरी माना गया है।

Question 8.

पुराने नियमों, रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़ना कब और क्यों आवश्यक हो जाता है?

Answer:

पुराने नियमों, रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़ना तब आवश्यक हो जाता है जब वे सड़-गल जाएँ अर्थात महत्त्वहीन हो जाएँ और समाज का कल्याण करने के स्थान पर अकल्याणकारी हो जाएँ।

पुरानी परंपराओं व रूढ़ियों को तोड़ना इसलिए आवश्यक है क्योंकि ये मानव के विकास में अवरोध पैदा करती हैं। विवेकपूर्ण फ़ैसले के द्वारा उन्हीं परंपराओं को ग्रहण करना चाहिए, जो कल्याणकारी हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। अतः प्राचीन परंपराओं व रूढ़ियों में भी परिवर्तन व संशोधन कर समाज व देश को शिक्षित व विकसित बनाने के लिए नई व कल्याणकारी परंपराओं का निर्माण करना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 9.

महावीर प्रसाद द्विवेदी स्त्री-शिक्षा का पुरज़ोर समर्थन करते हैं। उनके दो तर्कों का उल्लेख कीजिए।

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी स्त्री-शिक्षा का समर्थन करते हैं क्योंकि पढ़ने-लिखने में स्वयं ऐसी कोई बात नहीं है जो किसी का अनर्थ कर सके। प्राचीन समय में उन्हें शिक्षित करना, हो सकता हो कि उचित न हो पर आज इस प्राचीन मान्यता में संशोधन कर नारी-शिक्षा अनिवार्य कर देनी चाहिए। नारी को निरक्षर रखने से समाज का अपकार व अपराध होता है। एक शिक्षित नारी ही मानव, समाज व देश को शिक्षित व विकसित कर सकती है।

Question 10.

लेखक नाटकों में स्त्रियों की भाषा प्राकृत होने को उनकी अशिक्षा का प्रमाण नहीं मानता। इसके लिए वह क्या तर्क देता है?

Answer:

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत भाषा बोलना उनकी अशिक्षा का प्रमाण नहीं है क्योंकि उस समय संस्कृत कुछ गिने-चुने व्यक्ति ही बोलते थे। आम व्यक्ति प्राकृत भाषा ही बोलते थे। प्राकृत ही आम बोलचाल की भाषा थी। संस्कृत न बोल पाना अपढ़ या अशिक्षा का प्रमाण नहीं था। भवभूति व कलिदास के नाटक जिस ज़माने के हैं, उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत बोलता हो, ऐसा कोई प्रमाण नहीं है।

Question 11.

स्त्री-शिक्षा के विरोधी अपने पक्ष में क्या-क्या तर्क देते हैं? दो का उल्लेख कीजिए।

Answer:

स्त्री-शिक्षा के विरोधी अपने पक्ष में निम्नलिखित तर्क देते हैं–

(*i*) प्राचीन संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्री पात्रों को अनपढ़ों की भाषा बोलते दिखाया गया है। इससे पता चलता है कि हमारे देश में स्त्री-शिक्षा का चलन न था।

(*ii*) स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है। शकुंलता ने पढ़ाई के कारण ही दुष्यंत को कटु वचन कहे, जिस कारण अनर्थ हुआ।

Question 12.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' लेखक की दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है। कैसे?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का यह निबंध उनकी दूरगामी व खुली सोच का परिचायक है क्योंकि उन्होंने उस समय स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया जब लोग इसे व्यर्थ और अनावश्यक मानते थे। उनका दृष्टिकोण स्त्री-शिक्षा के पक्ष में व्यापक था। भविष्य में उनकी बात सही साबित हुई। सभी को स्त्री-शिक्षा का महत्त्व समझ में आने लगा। आज स्त्रियाँ शिक्षित होकर एक-से-एक बड़े कार्य कर रही हैं। लेखक ने बिल्कुल उचित समय पर नारी शिक्षा के प्रति अपना योगदान दिया।

Question 13.

महावीर प्रसाद द्विवेदी किस परिस्थिति में प्रसिद्ध अख़बार के संपादक को भी अपढ़ मानते है और क्यों?

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी आज की उस परिस्थिति में प्रसिद्ध अख़बार के संपादक को भी अपढ़ मानते हैं क्योंकि वह भी आज की प्रसिद्ध भाषा का प्रयोग संपादन के लिए करते हैं। अतः यदि प्राचीन काल की स्त्रियाँ भी प्रचलित भाषा प्राकृत बोलने के कारण अपढ़ और गँवार मानी जाती थीं, तो आजकल के संपादक और बुद्धिजीवी भी प्रचलित भाषा के प्रयोग के कारण अपढ़ और गँवार माने जा सकते हैं।

Question 14.

कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया? दो का उल्लेख कीजिए।

Answer:

जो पुरातनपंथी स्त्री-शिक्षा के विरोधी थे, उनके लिए द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए–

(*i*) प्राचीन काल में अनेक स्त्रियाँ जैसे सीता, रुक्मिणी, गार्गी, शकुंलता आदि विदुषी महिलाएँ थीं और उन्होंने अनेक काव्य रचनाएँ कीं।

(*ii*) स्त्रियों को अपढ़ रखने से समाज व देश का कल्याण नहीं हो सकता। अतः वर्तमान व भविष्य के विकास के लिए प्राचीन नियमों को तोड़कर स्त्री-शिक्षा को अनिवार्य कर देना चाहिए।

Question 15.

सिद्ध कीजिए कि वर्तमान में लड़कियाँ क्षमता में लड़कों से पीछे नहीं हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ईश्वर की कृति लड़का और लड़की को समान बनाया गया है। लड़कियाँ क्षमता में लड़कों से किसी भी प्रकार कम नहीं है। आज वे शिक्षा में लड़कों से अधिक अंक लाती हैं। लड़कों के समान शारीरिक शक्ति वाले कार्यों जैसे– खेलकूद, सेना की नौकरी, अंतरिक्ष अनुसंधान सभी में सफलतापूर्वक अपना योगदान दे रही हैं। साथ ही वे घर सँभालने के साथ-साथ शिक्षित होकर बाहर भी कुशल भूमिका निभा रही हैं तथा परिवार, समाज और देश के विकास में संपूर्ण योगदान दे रही हैं।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 16.

स्त्री-शिक्षा विरोधियों के किन्हीं दो कुतर्कों का उल्लेख कीजिए।

Answer:

स्त्री-शिक्षा विरोधियों के दो कुतर्क निम्नलिखित हैं–

(*i*) उनके अनुसार स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। शकुंतला ने दुष्यंत से जो कटु वाक्य कहे वह उसकी कम पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था। उसकी इस कम पढ़ाई ने अनर्थ कर डाला था।

(*ii*) स्त्री-शिक्षा विरोधियों ने तो यहाँ तक कह डाला कि स्त्रियों को पढ़ाने से घर के सुख का नाश होता है। प्राचीन संस्कृत कवियों ने नाटकों में कुलीन स्त्री-पात्रों को अनपढ़ों की भाषा बोलते दर्शाया है। इन उदाहरणों से वे साबित करना चाहते थे कि प्राचीन काल में स्त्रियों की शिक्षा का चलन न था।

Question 17.

स्त्री-शिक्षा के समर्थन या विरोध में अपनी ओर से दो तर्क दीजिए जिनका उल्लेख पाठ में न हुआ हो।

Answer:

स्त्री-शिक्षा के समर्थन में हम तर्क देना चाहते हैं कि–

(*i*) एक स्त्री परिवार की धुरी है। यदि वह शिक्षित होगी, तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। परिवार शिक्षित होंगे, तो समाज शिक्षित होगा। एक शिक्षित समाज ही देश का सच्चा विकास कर सकता है। अतः स्त्रियों के लिए शिक्षा अति आवश्यक है।

(*ii*) स्त्री, आबादी का आधा हिस्सा होने के साथ-साथ पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। अतः शिक्षा के अभाव में समाज व देश के विकास में उसकी क्षमता पूरा योगदान देने में असमर्थ होगी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 18.

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना क्या उनके अपढ़ होने का सबूत है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

Answer:

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं है क्योंकि उस समय प्राकृत आम बोलचाल की भाषा थी। अनेक विद्वानों ने उस समय प्राकृत भाषा में अनेक महान ग्रंथों की रचना की थी। भगवान शाक्य मुनि और उनके शिष्यों ने प्राकृत में ही धर्मोपदेश दिए। महात्मा बुद्ध के त्रिपिटिक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यह था कि उस समय प्राकृत ही जन साधारण की भाषा थी। अतः प्राचीन समय में नारियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। हाँ, यह हो सकता है कि उस समय कुछ गिने-चुने लोग ही संस्कृत बोलते थे और स्त्रियों व अन्य जन साधारण के लिए प्राकृत भाषा बोलने का नियम रहा होगा।

Question 19.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में शकुंतला और सीता का उल्लेख क्यों किया गया है?

Answer:

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में शकुंतला और सीता का उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि दोनों ने ही शकुंतला ने दुष्यंत को और सीता ने राम को कटु वचन कहे थे। सीता ने राम के आचरण को कुल, शील व पांडित्य को बट्टा लगाने वाला बताया था, क्योंकि उन्होंने सीता की अग्नि परीक्षा के बाद भी उसे त्याग दिया था। यहाँ तक कि सीता ने राम को आर्यपुत्र, नाथ व देव न कहकर केवल राजा कहकर अपना संदेश भेजा था। लेखक ने इनका उल्लेख इसलिए किया है कि यदि शकुंतला की कम पढ़ाई ने यह अनर्थ किया, तो सीता तो पढ़ी-लिखी, जनक-पुत्री थीं। अतः पढ़ने लिखने से अनर्थ हो सकने वाली बात का कोई संबंध नहीं है।

Question 20.

'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं' स्त्री-शिक्षा विरोधियों के इस कथन का खंडन द्विवेदी जी ने किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं' इस बात का खंडन द्विवेदी जी ने निम्नलिखित तर्क देकर किया है। उनके अनुसार स्त्रियों को पढ़ाने से कभी कोई अधर्म नहीं होता। प्राचीन काल में भी अनेक पढ़ी-लिखी विदुषी महिलाओं का उल्लेख किया गया है। जिन्होंने पढ़-लिखकर वेदों की रचना की। पढ़-लिखकर ही गार्गी व मंडन मिश्र की पत्नी ने बड़े-बड़े विद्वानों के छक्के छुड़ा दिए।

द्विवेदी जी के अनुसार जिस प्राचीन भारत में स्त्रियों को नृत्य-गायन, चित्र-कला, हस्तशिल्प-कला जैसी अन्य विधाओं को सीखने की स्वतंत्रता थी। वहाँ यह कैसे माना जा सकता है कि प्राचीन समय में स्त्रियों के पढ़ने पर रोक थी।

द्विवेदी जी ने व्यंग्य के द्वारा इन कुतर्कों का खंडन किया हे उनके अनुसार स्त्रियों को अनपढ़ रखकर भारत का गौरव कैसे बढ़ाया जा सकता है।

Question 21.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में स्त्री-शिक्षा के विरोधियों ने किन तर्कों के आधार पर अपने पक्ष को पुष्ट किया है?

Answer:

पाठ 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' में स्त्री-शिक्षा के विरोधियों ने निम्नलिखित तर्कों के आधार पर अपने पक्ष को पुष्ट किया है–

(*i*) उनके अनुसार स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते थे।

(*ii*) शकुंतला ने दुष्यंत से जो कटु वाक्य कहे, वह उसकी कम पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।

(*iii*) उन्होंने यहाँ तक कह डाला कि स्त्रियों को पढ़ाने से घर के सुख का नाश होता है।

(*iv*) प्राचीन संस्कृत कवियों ने नाटकों में कुलीन स्त्री पात्रों को अनपढ़ों की भाषा बोलते दर्शाया है। इन उदाहरणों द्वारा वे साबित करना चाहते थे कि प्राचीन काल में स्त्रियों की शिक्षा का चलन न था।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 22.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज़ नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

जो लोग यह कहते हैं कि पुराने ज़माने में यहाँ स्त्रियाँ न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दंडनीय हैं क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है। समाज की उन्नति में बाधा डालना है।

(क) लेखक 'अनर्थ' का मूल नहीं मानता है–

(*i*) पढ़ने-लिखने की उपेक्षा को।
(*ii*) स्त्री-पुरुष होने को।
(*iii*) स्त्रियों की पढ़ाई को।
(*iv*) दुराचार और पापाचार को।

(ख) वे लोग इतिहास की जानकारी नहीं रखते जो कहते हैं कि–

(*i*) स्त्री-शिक्षा समाज की उन्नति में बाधा है।
(*ii*) पुराने ज़माने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं।
(*iii*) स्त्रियों को जान-बूझकर अनपढ़ रखा जाता था।
(*iv*) स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अधिकार है।

(ग) 'अनर्थ' का तात्पर्य है–

(*i*) दोषपूर्ण कार्य।
(*ii*) निंदनीय कार्य।
(*iii*) धनरहित कार्य।
(*iv*) अनुचित कार्य।

(घ) सामाजिक दृष्टि से ऐसे लोग दंड के पात्र हैं जो–

(*i*) स्त्रियों को पढ़ाने की बात करते हैं।
(*ii*) जान-बूझकर लोगों को धोखा देते हैं।
(*iii*) सामाजिक नियमों की अनदेखी करते हैं।
(*iv*) समाज की उन्नति में बाधा डालते हैं।

(ङ) 'अभिज्ञ' शब्द का विलोम है–

(*i*) अज्ञ
(*ii*) अनभिज्ञ
(*iii*) सुभिज्ञ
(*iv*) प्राज्ञ

Answer:

(क) (*iii*) स्त्रियों की पढ़ाई को।
(ख) (*iv*) पुराने ज़माने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थीं।
(ग) (*iv*) अनुचित कार्य।
(घ) (*iv*) समाज की उन्नति में बाधा डालते हैं।
(ङ) (*ii*) अनभिज्ञ

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2013

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 23.

स्त्री-शिक्षा के विषय में आप महावीर प्रसाद द्विवेदी के विचारों से कहाँ तक सहमत हैं? उचित तर्क देकर अपने विचारों की पुष्टि कीजिए।

Answer:

स्त्री-शिक्षा के विषय में हम महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के विचारों से पूर्णतः सहमत हैं क्योंकि आज आधुनिक समय में नारी शिक्षा के अभाव में किसी भी परिवार, समाज व देश का विकास असंभव है। नारी शिक्षा आज के समय की प्रबल माँग है। स्त्री परिवार की धुरी होती है। उसके शिक्षित होने से ही परिवार व समाज शिक्षित होगा।

स्त्री आबादी का आधा हिस्सा होने के साथ-साथ पुरुष की पूरक भी है। आज वह हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। शिक्षा के अभाव में वह देश के विकास में अपना संपूर्ण योगदान करने में असमर्थ होगी। महावीर जी प्राचीन समय में भी नारियों की शिक्षा का समर्थन करते थे कि वे उस समय भी पढ़ी-लिखी होती थीं और आज तो उनकी शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए, तभी संपूर्ण देश का विकास व कल्याण संभव है।

Question 24.

महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध में उद्धृत भारत की सुशिक्षित स्त्रियों में से किन्हीं तीन के योगदान पर प्रकाश डालिए।

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध में निम्नलिखित सुशिक्षित स्त्रियों के योगदान की चर्चा की गई है।

(*i*) **गार्गी**– गार्गी गर्गमुनि वचक्नु की कन्या थीं। वैदिक समय की महान पंडिता ऋषि पुत्री थीं। इन्होंने मिथिला के राजा जनक की सभा में अनेक ज्ञानियों के समक्ष ऋषि याज्ञवल्क्य से वेदांत शास्त्र विषय पर शास्त्रार्थ किया। अतः प्राचीन समय में सुशिक्षित नारियों के उदाहरण मिलते हैं।

(*ii*) **रुक्मिणी**– इन्होंने भी अपना पांडित्य दिखाया और एकांत में एक लंबा-चौड़ा पत्र लिखकर श्री कृष्ण जी को भिजवाया था। यह उनके पांडित्य का ही परिणाम था।

(*iii*) **अत्रि ऋषि की पत्नी अनुसूया**– व्याख्यान देते हुए घंटों अपने पांडित्य का प्रदर्शन करती थीं। इन उदाहरणों से उस समय की स्त्रियों के पांडित्य का पता चलता है।

Question 25.

महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध के आलोक में बताइए कि स्त्री-शिक्षा के प्रति हमारे दृष्टिकोण में क्या अंतर आया है और उसका क्या परिणाम हुआ है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित पाठ के संदर्भ में आज स्त्री-शिक्षा के प्रति हमारे दृष्टिकोण में काफ़ी अंतर आया है। समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग स्त्री-शिक्षा का समर्थन करता है क्योंकि वह देश के विकास में शिक्षित स्त्री के योगदान से परिचित है, लेकिन आज भी कुछ पढ़े-लिखे लोगे ऐसे हैं जो स्त्री-शिक्षा का समर्थन नहीं करते या जिनका अहं स्त्री को उनसे आगे निकलते नहीं देखकर सकता, पर फिर भी आज स्त्रियाँ शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। इसका परिणाम सुखद ही हुआ है। आज हर क्षेत्र में शिक्षित स्त्रियों का बोलबाला है। वे जी-जान से परिवार, समाज व देश के विकास में अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं।

Question 26.

'द्विवेदी जी का स्त्री-शिक्षा-संबंधी लेख उनकी दूरगामी सोच का परिणाम है।' इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्कसहित उत्तर दीजिए–

Answer:

'द्विवेदी जी का स्त्री-शिक्षा-संबंधी लेख उनकी दूरगामी सोच का परिणाम है।' मैं इस कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत कर रहा हूँ–

(*i*) महावीर जी ने उस समय स्त्री-शिक्षा का पक्ष लिया जब लोग स्त्री-शिक्षा को बिलकुल महत्त्व नहीं देते थे। उनके लिए पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का दर्जा दूसरा था।

(*ii*) स्त्री-शिक्षा के लिए द्विवेदी जी का दृष्टिकोण स्वतंत्र व व्यापक था। उन्हें पता था कि भविष्य में समाज व देश के विकास के लिए स्त्री-शिक्षा को महत्त्व देना ही होगा।

(*iii*) आज उनकी स्त्री-शिक्षा की वकालत बिलकुल सही साबित हो रही है। आज स्त्रियाँ पढ़-लिखकर हर क्षेत्र में विकास कर रही हैं और ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुँच रही हैं।

(*iv*) यदि द्विवेदी जी ने उस समय स्त्री-शिक्षा को ध्यान में रखते हुए उसकी वकालत न की होती, तो आज नारी शिक्षा का इतना विकास न हुआ होता।

अतः स्त्री-शिक्षा के पक्ष में अपना समर्थन देकर द्विवेदी जी ने शिक्षा, समाज व देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 27.

निम्नांकित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

बड़े शोक की बात है, आजकल भी ऐसे लोग विद्यमान हैं जो स्त्रियों को पढ़ाना उनके और गृह-सुख के नाश का कारण समझते हैं और, लोग भी ऐसे-वैसे नहीं, सुशिक्षित लोग– ऐसे लोग जिन्होंने बड़े-बड़े स्कूलों और शायद कॉलिजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्म-शास्त्र और संस्कृत के ग्रंथ-साहित्य से प्ररिचय रखते हैं, और जिनका पेशा कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना, कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मतत्त्व समझाना है।

(क) लेखक ने बड़े शोक की बात मानी है–

(*i*) आजकल के समय को
(*ii*) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों के अस्तित्व को
(*iii*) गृह-सुख के विनाश को
(*iv*) स्त्रियों के पढ़ाने-लिखाने को

Answer:

(ख) 'ऐसे वैसे नहीं' से तात्पर्य है–

(*i*) सुशिक्षित और शास्त्रज्ञ
(*ii*) मूर्ख और अनपढ़
(*iii*) हठी और सनकी
(*iv*) कुमार्गगामी और अधर्मी

(ग) 'ये लोग' क्या व्यवसाय करते हैं?

(*i*) स्कूल-कॉलिजों में पढ़ाते हैं।
(*ii*) भटके राहगीरों को राह दिखाते हैं।
(*iii*) अधार्मिकों को धर्म के तत्त्व समझाते हैं।
(*iv*) असामाजिकों को सामाजिक बनाते हैं।

(घ) 'शोक' का समानार्थक है–

(*i*) शौक़
(*ii*) दुख
(*iii*) मातम
(*iv*) वेदना

(ङ) 'ऐसे लोग हैं जिन्होंने बड़े-बड़े स्कूलों, कॉलिजों में शिक्षा पाई है'– वाक्य का प्रकार है–

(*i*) सरल
(*ii*) संयुक्त
(*iii*) मिश्र
(*iv*) साधारण

(क) (*ii*) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों के अस्तित्व को
(ख) (*ii*) मूर्ख और अनपढ़
(ग) (*i*) स्कूल-कॉलिजों में पढ़ाते हैं।
(घ) (*iii*) मातम
(ङ) (*iii*) मिश्र

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 28.

उत्तररामचरित, त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध किस भाषा में रचे गए?

Answer:

उत्तररामचरित– संस्कृत में तथा त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध महाकाव्य– प्राकृत भाषा में रचे गए हैं।

Question 29.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के समर्थन में अपने विचार प्रकट किए हैं। उनका यह निबंध दूरगामी और खुली सोच का परिचायक हैं। वे स्त्री-शिक्षा के प्रति बहुत ही सजग थे क्योंकि वह यह जानते थे कि स्त्री के शिक्षित होने पर ही देश और समाज की उन्नति संभव है। संतान को जागरूक, योग्य बनाने में माँ का महत्त्वपूर्ण स्थान है इसलिए उन्होंने स्त्री को बच्चे की प्रथम शिक्षिका माना। एक शिक्षित स्त्री ही बच्चों को अच्छे संस्कार दे सकती है। शिक्षा के अभाव में वह न तो स्वयं योग्य बन सकती है और न अपनी संतान को योग्य बना सकती है। परिवार, राष्ट्र और समाज को वैभवपूर्ण एवं समृद्धशाली बनाने के लिए स्त्री-शिक्षा को उन्होंने अनिवार्य माना।

Question 30.

'आधुनिक शिक्षा-प्रणाली' के विषय में द्विवेदी जी के विचार प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

द्विवेदी जी ने शिक्षा का व्यापक अर्थ लिया, जिसमें पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त सीखने योग्य अनेक विषय समाहित हैं। उनका यह मानना था कि इस देश की वर्तमान-शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं है। उसमें त्रुटियाँ हैं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझते है, तो स्त्रियों को पढ़ने-लिखने से रोकने की बजाए वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में सुधार करना चाहिए। प्रणाली बुरी होने का यह मतलब नहीं कि स्कूल और कॉलेज बंद कर देने चाहिए। लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली में संशोधन करना चाहिए कि उन्हें क्या पढ़ाना है, कितना पढ़ाना है, किस तरह की शिक्षा देनी है, कहाँ शिक्षा देनी है, इन सब पर विचार होना चाहिए न कि पढ़ाई-लिखाई को दोषपूर्ण अथवा अनर्थकर मानना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 31.

द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के समर्थन में प्राचीन समय की जिन महिलाओं का उल्लेख किया है, उनमें से किन्हीं दो का नामोल्लेख करते हुए स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान पर प्रकाश डालिए।

Answer:

द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के समर्थन में प्राचीन समय की जिन महिलाओं का उल्लेख किया है, उनमें दो प्रमुख स्त्रियाँ हैं–

(*i*) **अत्रि की पत्नी**– ये घंटों पत्नी धर्म पर व्याख्यान देते हुए थकती नहीं थीं।

(*ii*) **गार्गी**– ये ऐसी ब्रह्मवादिनी थीं, जो बड़े-बड़े ब्रह्मवादियों को हरा देती थीं।

वास्तव में ये वे स्त्रियाँ थीं, जिनका गौरवपूर्ण इतिहास यह बताता है कि ये स्त्रियाँ उस समय किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं थीं। ये उनके शिक्षित होने का प्रमाण था कि वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करने की पूर्ण क्षमता रखती थीं। स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी स्त्रियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

Question 32.

द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का खंडन किया है?

Answer:

द्विवेदी जी ने स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए निम्न तर्क देकर स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का खंडन किया है–

(*i*) किसी भी समाज या देश की उन्नति के लिए स्त्री-शिक्षा अनिवार्य है क्योंकि स्त्री के जागरूक होने पर देश अथवा समाज का कल्याण संभव है।

(*ii*) संतान के व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी माँ का शिक्षित होना अनिवार्य है क्योंकि वास्तव में वह ही बालक की प्रथम शिक्षिका कहलाती है।

(*iii*) एक सुशिक्षित स्त्री ही बच्चे के भीतर अच्छे संस्कारों का निर्माण कर सकती हैं।

(*iv*) स्त्री-शिक्षा के अभाव में देश का गौरव बनाए रखना असंभव है। परिवार, समाज एवं राष्ट्र को समृद्धशाली बनाए रखने के लिए स्त्री-शिक्षा अनिवार्य हैं।

Question 33.

द्विवेदी जी ने विक्षिप्त, वातव्यथित और ग्रहग्रस्त किन लोगों को कहा है और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

द्विवेदी जी ने विक्षिप्त, वातव्यथित, ग्रहग्रस्त उन लोगों को कहा है जो यह मानते हैं कि स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। यदि स्त्रियों का किया हुआ अनर्थ उन्हें पढ़ाने का ही परिणाम है, तो पुरुषों का किया हुआ अनर्थ भी उनकी विद्या और शिक्षा का ही परिणाम समझना चाहिए क्योंकि यदि बम के गोले फेंकना, नरहत्या करना, डाके डालना, चोरियाँ करना आदि पढ़ने-लिखने के परिणाम हैं, तो सारे कॉलिज, स्कूल और पाठशालाएँ बंद हो जाने चाहिए। वास्तव में, ऐसी दलीलें देने वाले विक्षिप्त, वात-व्यथित, ग्रहगस्त लोगों की सोच अति संकीर्ण है क्योंकि वे स्वयं कुछ करने की क्षमता नहीं रखते। उनकी संकुचित वैचारिक दृष्टि उन्हें आगे बढ़ने नहीं देती।

Question 34.

महावीर प्रसाद द्विवेदी के लेख के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि यदि स्त्रियों को न पढ़ाया जाए तो क्या हानियाँ होंगी।

Answer:

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्त्री-शिक्षा को बहुत महत्त्वपूर्ण माना। स्त्रियों को यदि न पढ़ाया जाए, तो निम्नलिखित हानियाँ होंगी–

- समाज और देश की उन्नति रुक जाएगी क्योंकि स्त्री के जागरूक होने पर ही देश अथवा समाज की उन्नति संभव हो सकती है।
- स्त्री शिक्षा के अभाव में संतान योग्य, निपुण एवं सभ्य नहीं हो पाएगी। संतान के व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी माँ का शिक्षित होना अनिवार्य है क्योंकि वह ही बालक की प्रथम शिक्षिका कहलाती है।
- बच्चे के भीतर अच्छे संस्कारों का निर्माण सुशिक्षित स्त्री द्वारा संभव है।
- शिक्षा के अभाव में स्त्री न स्वयं का व्यक्तित्व निर्माण कर सकती है, न अपनी संतान का।
- स्त्री शिक्षा के अभाव में देश के गौरव को बनाए रखना असंभव है।
- परिवार, राष्ट्र, और समाज को समृद्धशाली बनाए रखने में स्त्री-शिक्षा अनिवार्य है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 35.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देना चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए– घर में या स्कूल में– इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आए सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है– वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

(क) कुछ लोगों के अनुसार स्त्री शिक्षा के अनर्थकर होने का एक संभावित कारण है–

(*i*) शिक्षित स्त्री का स्वतंत्र होना।
(*ii*) शिक्षित स्त्री द्वारा पुरुष की बराबरी करना।
(*iii*) शिक्षित स्त्री द्वारा परिवार की उपेक्षा करना।
(*iv*) वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

(ख) यदि देश की शिक्षा-प्रणाली अच्छी न हो तो हमें–

(*i*) स्त्रियों को पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए। (*ii*) स्कूल-कॉलेजों को बंद कर देना चाहिए।
(*iii*) लड़कियों को घर पर ही पढ़ाना चाहिए। (*iv*) शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।

(ग) लेखक ने किसको 'सोलह आने मिथ्या' कहा है?

(*i*) स्कूल-कॉलेज की शिक्षा को। (*ii*) शिक्षा प्रणाली के संशोधन को।
(*iii*) सुधारकों के प्रयासों को। (*iv*) स्त्री-शिक्षा को अनर्थकर मानने को।

(घ) 'किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ'– वाक्य का प्रकार है–

(*i*) सरल वाक्य (*ii*) संयुक्त वाक्य
(*iii*) मिश्र वाक्य (*iv*) साधारण वाक्य

(ङ) 'सोलहों आने' मुहावरे का अर्थ है–

(*i*) एकदम खरा (*ii*) परम पवित्र
(*iii*) पूरी तरह (*iv*) प्रतिभायुक्त

Answer:

(क) (*iv*) वर्तमान शिक्षा प्रणाली (ख) (*iv*) शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।
(ग) (*iv*) स्त्री-शिक्षा के अनर्थकर मानने को। (घ) (*iii*) मिश्रित वाक्य
(ङ) (*i*) एकदम खरा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 36.

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अपढ़ होने का सबूत है? 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं है क्योंकि–

(*i*) प्राकृत भाषा उस समय जन साधारण की भाषा थी।

(*ii*) सुशिक्षित लोग प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।

(*iii*) बौद्धों तथा जैनों के ग्रंथों– गाथा सप्तशती, कुमारपाल चरित महाकाव्य इत्यादि की रचना प्राकृत में हुई।

(*iv*) भगवान शाक्य मुनि तथा उनके शिष्यों ने प्राकृत में ही उपदेश दिए।

(*v*) प्राकृत उस समय बोलचाल की प्रचलित भाषा था।

अतः स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा का प्रयोग उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं है।

Question 37.

स्त्री-शिक्षा के विरोधियों ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का विरोध किया है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

Answer:

स्त्री शिक्षा का विरोध करने वालों ने निम्नलिखित कुतर्क देकर स्त्री-शिक्षा का विरोध किया है–

(*i*) उनका मानना है कि इतिहास-पुराण में स्त्रियों के पढ़ाने को लेकर कोई नियमबद्ध प्रणाली नहीं मिलती, जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्रियों को पढ़ाने का चलन नहीं था।

(*ii*) पुराने संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियाँ भी अपढ़ों की भाषा में बातें करती थीं।

(*iii*) उनका तर्क यह भी है कि स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है। इसके लिए वे उदाहरण देते हैं कि शकुंतला द्वारा दुष्यंत को कटु वचन कहना पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था।

(*iv*) उनका मानना यह भी है कि शकुंतला द्वारा रचा गया श्लोक अपढ़ों की भाषा का था, अतः स्त्रियों को तो अपढ़, गँवारों की भाषा पढ़ाना भी उन्हें बरबाद करना है।

Question 38.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने किन तर्कों के आधार पर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

प्रश्न 29 का उत्तर देखें।

Question 39.

'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं'– कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

प्रश्न 32 का उत्तर देखें।

Question 40.

परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाते हों– 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर तर्क-सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

'परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए, जो स्त्री-पुरुष की समानता को बढ़ाते हैं'– स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक महावीरप्रसाद द्विवेदी का यह मत है कि हमें प्राचीन काल से चली आ रहीं उन सभी परंपराओं को अस्वीकार कर लेना चाहिए, जो वर्तमान समय में अपनी कोई प्रासंगिकता नहीं रखतीं, जो आज की स्थितियों के अनुरूप नहीं बैठतीं। ऐसी परंपराओं को त्यागना ही उचित है। पाठ में कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्री-शिक्षा के विरोधी हैं। द्विवेदी जी ने ऐसे परंपरावादियों के विरोध में स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को उजागर किया हैं। वर्तमान समय में स्त्री-शिक्षा न केवल समय की माँग है, अपितु स्त्री-शिक्षा के बिना परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है। आज स्त्री-पुरुष की समानता में भेदभाव नहीं होना चाहिए क्योंकि आज स्त्री पुरुष से कहीं भी पीछे नहीं है। इसलिए उन सभी मान्यताओं को स्वीकार करना होगा जो स्त्री-पुरुष समानता की पक्षधर हैं।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 41.

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए–

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले, तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों और जैनों के हज़ारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान् शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी।

(क) संस्कृत नाटकों में स्त्रियों के लिए प्राकृत बोलने का विधान था, क्योंकि–

(*i*) वे अपढ़ होती थीं।
(*ii*) संस्कृत नहीं बोल सकती थीं।
(*iii*) वे गँवार थीं।
(*iv*) उस युग में बोलचाल की भाषा प्राकृत थी।

(ख) लेखक क्या सिद्ध करने की चुनौती देता है?

(*i*) कालिदास और भवभूति संस्कृत नाटककार थे।
(*ii*) कालिदास के युग में सब संस्कृत ही बोलते थे।
(*iii*) कालिदास के युग में सब प्राकृत ही बोलते थे।
(*iv*) कालिदास और भवभूति का इतिहास में कोई प्रमाण नहीं है।

(ग) बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा है–

(*i*) पाली (*ii*) संस्कृत (*iii*) अपभ्रंश (*iv*) प्राकृत

(घ) भगवान शाक्य मुनि और उनके शिष्य प्राकृत में ही धर्मोपदेश क्यों देते थे?

(*i*) उन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं था।
(*ii*) वे केवल प्राकृत ही जानते थे।
(*iii*) वे अपढ़ थे।
(*iv*) सर्वसाधारण की भाषा प्राकृत ही थी।

(ङ) 'पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं?' वाक्य में 'कौन-सी' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है?

(*i*) सर्वनाम
(*ii*) सार्वनामिक विशेषण
(*iii*) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(*iv*) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) (*ii*) संस्कृत नहीं बोल सकती थीं।

(ख) (*ii*) कालिदास के युग में सब संस्कृत ही बोलते थे।

(ग) (*iv*) प्राकृत

(घ) (*iv*) सर्वसाधारण की भाषा प्राकृत ही थी।

(ङ) (*ii*) सार्वनामिक विशेषण

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 42.

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में स्त्री शिक्षा के विरोधियों ने किन तर्कों के आधार पर अपने पक्ष को पुष्ट किया है?

Answer:

स्त्री शिक्षा के विरोधियों ने निम्नलिखित तर्क देकर अपने पक्ष को पुष्ट किया है–

(*i*) पुरातन काल के साहित्य में स्त्रियों से अपढ़ों की भाषा में बातें कराई गईं क्योंकि स्त्री-शिक्षा का प्रचलन नहीं था। वैसे भी किसी भी पुराणादि में स्त्रियों को पढ़ाने की कोई प्रणाली वर्णित नहीं है।

(*ii*) स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। कम शिक्षित स्त्री कटुभाषी बन जाती है, जिसके कई दुष्परिणाम होते हैं।

(*iii*) अपढ़ गँवारों की भी भाषा स्त्रियों को पढ़ाना बरबादी है।

Question 43.

द्विवेदी जी ने 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ में किन तर्कों के आधार पर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया है?

Answer:

द्विवेदी जी ने विभिन्न तर्कों के आधार पर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया है, जैसे कि–

(*i*) भारत में पुरातन काल से ही अनेक ऐसी नारियाँ हुई हैं, जिन्होंने अपनी मेधा, शास्त्रार्थ, व्याख्यानों और तर्कों से बड़े-बड़े ज्ञानियों को परास्त किया है।

(*ii*) निःसंदेह स्त्री-शिक्षा संबंधी कोई प्रमाण प्राचीन काल के साहित्य में नहीं मिलते, परंतु यह किसी भी भाँति स्त्री के शिक्षित न होने का भी तो प्रमाण नहीं है।

(*iii*) स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा बोलना उनकी अज्ञानता का परिचायक नहीं है।

(*iv*) शकुंतला के कटु वचन परिस्थितिजन्य दुख के कारण उद्धृत हुए हैं न कि अज्ञानता अथवा अनपढ़ होने से। स्त्री-शिक्षा समाज की उन्नति व देश के गौरव को बढ़ाने के लिए अनिवार्य है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 44.

पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

Answer:

प्रश्न 18 का उत्तर देखें।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 45.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लीखिए–

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों की ही शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए– घर में या स्कूल में– इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आए सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है।

(क) स्त्रियों की पढ़ाई-लिखाई के पक्ष में लेखक के तर्क का आशय समझाइए।

(ख) शिक्षा-प्रणाली के दोषों के निराकरण के लिए लेखक ने कौन-से विकल्प दिए हैं?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए– 'लड़कों की ही शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है।'

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लेखक के तर्क का आशय यह है कि यदि शिक्षा प्रणाली में दोष है, तो उसका कुप्रभाव स्त्री-पुरुष दोनों की ही शिक्षा पर पड़ेगा। मात्र स्त्रियों की शिक्षा को समाप्त कर देना इसका समाधान नहीं है क्योंकि इस स्थिति में तो लड़कों को भी पढ़ाना बंद कर देना चाहिए। इस समस्या का वास्तविक समाधान यह है कि शिक्षा-प्रणाली में सुधार लाया जाए।

(ख) शिक्षा-प्रणाली के दोषों के निराकरण के लिए लेखक ने विकल्प दिए हैं कि शिक्षा के उद्देश्य, विषय तथा स्थान और विकल्प आदि पर बहस करनी चाहिए, सोच-विचार करना चाहिए। पढ़ाई-लिखाई को दोष देना सर्वथा अनुचित है।

(ग) इस कथन के द्वारा लेखक ने उन पुरातनपंथियों की दूषित सोच पर व्यंग्य किया है जो सोचते हैं कि स्त्रियों को शिक्षा देना अनर्थकारी हो जाएगा। लेखक का मानना है कि यदि स्त्रियों को शिक्षा देने से उसका उनपर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, तो फिर यह विश्वास के साथ कैसे कहा जा सकात है कि लड़कों के लिए बनाई गई शिक्षा-प्रणाली उनपर केवल सकारात्मक प्रभाव ही छोड़ रही है। लड़कों के अंदर आज जो नकारात्मक प्रभाव दिखाई दे रहा है, उसे देखकर तो उनके कॉलेजों को ही बंद कर देना चाहिए, किंतु अगर ऐसा लड़कों के साथ नहीं किया जा रहा, तो फिर स्त्री-शिक्षा को अनर्थकारी क्यों बताया जा रहा है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in